❶
ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 45, अंक 2 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 8 नवम्बर, 2021 से रविवार 14 नवम्बर, 2021
विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122
दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में

महर्षि दयानंद सरस्वती का 138वां निर्वाण दिवस समारोह भावपूर्णता के साथ सम्पन्न

यज्ञ, भजन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बच्चों की मुख्य भूमिका देखकर भावविभोर हुए आर्यजन

आर्यसमाज के नियमों का अनुपालन और महर्षि के सपनों को साकार करने का बच्चों ने लिया प्रेरक संकल्प

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में महर्षि दयानंद जी के 138वें निर्वाण दिवस का आयोजन 4 नवम्बर 2021 को एस.एम आर्य पब्लिक स्कूल, पश्चिम पंजाबी बाग, नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम का सम्पूर्ण संयोजन तथा प्रस्तुति बच्चों द्वारा ही की गई थी। कार्यकारणी द्वारा बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए यह योजनाबद्ध कार्यक्रम निश्चित किया गया था, जोकि अत्यन्त सफल सिद्ध हुआ।

"आज ऋषि का निर्वाण दिवस है, महर्षि देव दयानंद जी को श्रद्धांजलि देते हुए, उनको शत् शत् नमन करते हुए, आए हुए सभी आर्यजनों का स्वागत करते हुए, आज का कार्यक्रम आरंभ करते हैं। सबसे पहले हम यज्ञ करेंगे" आर्य स्वास्ति सहगल के इस सुन्दर संयोजन से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ।

यज्ञ ब्रह्मा पं. दिनेश आर्य तथा आचार्या ज्योति आर्या के निर्देशन में आर्य गुरुकुल सैनिक विहार की ब्रह्मचारिणियों ने मन्त्र पाठ के साथ यज्ञ सम्पन्न करवाया। यज्ञ में यजमान बनने वालों में प्रमुख रूप से प्रथम आर्य, अग्रिम आर्य, सुविज्ञ आर्य, वर्निका आर्य, विदित आर्य, स्वास्ति आर्य, ईश्वा आर्य, वेदांशी आर्य, और इच्छा आर्य थे। यज्ञ प्रार्थना गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम, हरि नगर, के ब्रह्मचारियों द्वारा की गई।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नित्या गुप्ता एवं विवान गुप्ता थे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी के नातिन-नाती ने ध्वजारोहण करके ओ३म् ध्वज के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करते हुए कहा कि ओ३म ध्वज आर्यों की शान है। हम इसे विश्वधरा पर फहराएंगे। ध्वजारोहण की व्यवस्था में आर्यवीर दल के आर्य वीरों ने

- शेष पृष्ठ 5 पर

ब्रह्मा, यजमान, ध्वजारोहण, गीत, कविता, नाटिका, मंच संचालन एवं शान्तिपाठ - सब कुछ बच्चों द्वारा किया जाना अद्भुत अनुभव - सुरेन्द्र रैली, कार्य.प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा

महर्षि दयानंद के 138वें निर्वाण दिवस एवं दीपावली की पूर्व संध्या पर दिल्ली सभा के अन्तर्गत

आर्यसमाज के पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं के बीच दीपावली यज्ञ एवं पुरस्कार वितरण समारोह

3 नवम्बर 2021, रघुमल कन्या आर्य सीनियर सेकेंडरी स्कूल। हर वर्ष भांति इस वर्ष भी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती जी के138 वें निर्वाण दिवस की पूर्व संध्या पर 3 नवम्बर 2021 को सायंकाल 4 बजे रघुमल आर्य कन्या सीनियर सेकेंडरी स्कूल के प्रांगण में दीपावली यज्ञ एवं पुरस्कार वितरण समारोह सहर्ष सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामंत्री श्री विनय आर्य, कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल, उपप्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य, श्री शिवकुमार मदान, श्री अरुण प्रकाश वर्मा, मंत्री श्री शिवशंकर गुप्ता, श्री सुखवीर सिंह आर्य, श्री कृपाल सिंह आर्य, श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के महामंत्री श्री सतीश चड्डा, उप प्रधान श्रीमती उषाकिरण आर्या, अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी इत्यादि महानुभाव उपस्थित थे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सभा के कार्यकर्ता, आर्य मीडिया सेंटर, अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ, सहयोग, हवन उत्थान समिति, मशाल इत्यादि सेवा इकाइयों के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

- शेष पृष्ठ 4 पर

कार्यकर्ताओं को पुष्प वर्षा के साथ आशीर्वाद प्रदान करते सभा अधिकारीगण

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
वर्ष 2022 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339
ऑन लाइन खरीदें
bit.ly/VedicPrakashan

देववाणी-संस्कृत

वह एक है !

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।। -ऋ॰ 1/164/46
ऋषिः **दीर्घतमाः।।** देवताः **सूर्यः।।** छन्दः **निचृत्त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **विप्राः** = ज्ञानी पुरुष **एकं सत्** = एक ही होते हुए को **बहुधा वदन्ति** = अनेक प्रकार से बोलते हैं। उस एक ही को **इन्द्रं, मित्रं, वरुणं, अग्निं आहुः** = इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि कहते हैं। **अथो सः दिव्यः सुपर्णः गरुत्मान्** = और वही दिव्य, सुपर्ण, गरुत्मान् कहलाता है **अग्निं यमं मातरिश्वानं आहुः** = उस एक ही को अग्नि, यम और मातरिश्वा कहते हैं।

विनय - हे मनुष्यो! इस संसार में एक ही परमात्मा है। हम सब मनुष्यों का एक ही प्रभु है। हम चाहे किसी सम्प्रदाय, किसी पन्थ, किसी मत के माननेवाले हों, परन्तु संसार भर के हम सब मनुष्यों का एक ही ईश्वर है। भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न सम्प्रदायवाले उसे भिन्न-भिन्न नाम से पुकारते हैं, परन्तु वह तो एक ही है। जो जिस देश में व जिस सम्प्रदाय के वायुमण्डल में रहा है, वह वहाँ के प्रचलित प्रभु नाम से उसे पुकारता है। कोई 'राम' कहता है, कोई 'शिव' कहता है, कोई 'अल्लाह' कहता है, कोई 'लॉर्ड' कहता है। 'विप्रों' ने, ज्ञानी पुरुषों ने, उस प्रभु को जिस रूप में देखा, उसके जिस गुणोत्कर्ष का उन्हें अनुभव हुआ, अपनी भाषा में उसी के वाचक शब्द से उसे वे पुकारने लगे। उन विप्रों द्वारा वही नाम उस समाज व सम्प्रदाय में फैल गया। कोई विप्र गुरु से ग्रहण करके उसे 'ओं' या 'नारायण' नाम से पुकारता है, तो कोई अपने महात्माओं और सद्ग्रन्थों से पाकर उसे 'खुदा' या 'रहीम' कहता है, परन्तु वह प्रभु एक ही है।

हम साम्प्रदायिक लोगों ने संसार में बड़े-बड़े उपद्रव किये हैं और आश्चर्य यह कि ये सब लड़ाई-दंगे अपने प्रभु के नाम पर हुए! वैष्णवों और शैवों के झगड़े हुए हैं, हिन्दू और मुसलमानों में रक्तपात हुए हैं, यहूदियों और ईसाइयों के युद्ध हुए हैं-यह सब क्यों? यह सब तभी होता है जब हम यह भूल जाते हैं कि "**एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति**"- वह एक ही है, परन्तु ज्ञानी लोगों ने अपने-अपने अनुभवों के अनुसार उसे भिन्न-भिन्न नाम दिया है। ईश्वर होने से वही 'इन्द्र' है, मृत्यु से त्राता होने से वही 'मित्र' है, पापनिवारक होने से वही 'वरुण' है, प्रकाशक होने से वही 'अग्नि' है। वेदमन्त्रों में इन नाना नामों से पुकारा जाता हुआ भी वह एक है। इसी प्रकार वेदमन्त्रों ने 'दिव्य', 'सुपर्ण' (शोभन पतनवाला) या 'गरुत्मान्' (गुरु आत्मा), 'अग्नि', 'यम' (नियन्ता) और 'मातरिश्वा' (अन्तरिक्ष में श्वसन करनेवाला) आदि भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा, परन्तु अज्ञानियों ने उसे भिन्न-भिन्न नामों से पृथक्-पृथक् समझ लिया और पृथक्-पृथक् कर दिया। वेद की पुकार सुनो-वह एक है! वह एक है! - **एकं सत्!**

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

वेद-स्वाध्याय

सम्पादकीय

इंडोनेशिया : हिन्दू धर्म में वापस लौटी राष्ट्रपति सुकर्णो की बेटी

नौ ये सच है इंडोनेशिया के पूर्व राष्ट्रपति सुकर्णो की बेटी सुकमावती सुकर्णोपुत्री अब इस्लाम धर्म को छोड़कर हिन्दू धर्म में वापिस लौट चुकी है। इंडोनेशिया के बाली द्वीप के बुलेलेंग रीजेंसी के सेंटर हेरिटेज एरिया में एक अनुष्ठान समारोह आयोजित किया गया और विधि विधान पूर्वक सुकमावती सुकर्णोपुत्री ने वैदिक सभ्यता को गले लगा लिया। ज्ञात हो सुकमावती सुकर्णोपुत्री सुकर्णो की तीसरी बेटी हैं और पूर्व राष्ट्रपति मेगावती सुकर्णोपुत्री की छोटी बहन भी हैं। वह इंडोनेशिया नेशनल पार्टी की संस्थापक भी रह चुकी हैं।

हालाँकि सुकमावती सुकर्णोपुत्री का नाम सुनकर कई लोगों का सवाल था कि जब उनका नाम ही हिन्दू है तो वह मुसलमान कैसे थी? अब इस सवाल का जवाब इंडोनेशिया का इतिहास लिए बैठा है। असल में सुकमावती सुकर्णोपुत्री की शादी आदिपति आर्य मंगकुनेगारा से हुई थी, लेकिन 1984 में उनका तलाक हो गया। फिर 2018 में सुकर्णोपुत्री काफी सुर्खियों में रही थी जब उनकी एक कविता विश्व भर में वायरल हुई। जिसमें उन्होंने लिखा था "जावा की हिन्दू महिलाओं का जूड़ा इस्लामी चादर से बेहद खूबसूरत है"

राजकुमारी सुकमावती और पति का नाम आदिपति आर्य मंगकुनेगारा इसी से पता चल जाता है कि भारत और इंडोनेशिया के रिश्ते हज़ारों साल पुराने हैं। कारण इंडोनेशिया में न सिर्फ़ हिन्दू धर्म बल्कि बौद्ध धर्म का भी गहरा प्रभाव नज़र आता है। इसका एक जीवित उदहारण ये भी है कि भले ही वहां कट्टरपंथी तबका महिलाओं को हिजाब में लपेटने की मुहीम चला रहा हो, लेकिन इंडोनेशिया के शाही महल में आज भी महिलाओं को सिर ढककर या हिजाब बुर्के में महल के अन्दर आने की इजाजत नहीं है। सिर्फ इतना ही नहीं भले ही भारत पाकिस्तान और बांग्लादेश के मुसलमान अपने आदर्श गौरी, गजनी, बाबर को समझते हों परन्तु इंडोनेशिया में ऐसा नहीं है। अगर आप इंडोनेशिया में महाभारत और रामायण का जिक्र करेंगे तो वे कहेंगे कि ये तो हमारे ग्रंथ हैं। श्रीराम जी, हनुमान जी समेत महाभारत के अनेकों पात्रों को वो लोग अपने पूर्वज मानते हैं। और गर्व से कहते हैं कि हमने मजहब बदला है पर पिता और पूर्वज नहीं।

कुछ साल पहले की बात है इंडोनेशिया के शिक्षा और संस्कृति मंत्री अनीस बास्वेदन भारत आए थे। इस यात्रा के दौरान उनके एक बयान ने खास तौर पर सुर्खियां बटोरीं। अनीस का कहना था कि हमारी रामायण दुनिया भर में मशहूर है। हम चाहते हैं कि इसका मंचन करने वाले हमारे कलाकार भारत के अलग-अलग शहरों में साल में कम से कम दो बार अपनी कला का प्रदर्शन करें। हम तो भारत में नियमित रूप से रामायण पर्व का आयोजन भी करना चाहेंगे।

दरअसल 90 फीसदी मुस्लिम आबादी वाले इंडोनेशिया पर आज भी रामायण की गहरी छाप है। हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान फादर कामिल बुल्के ने 1982 में अपने एक लेख में कहा था कि 35 वर्ष पहले मेरे एक मित्र ने जावा के किसी गांव में एक मुस्लिम शिक्षक को रामायण पढ़ते देखकर पूछा था कि आप रामायण क्यों पढ़ते हैं? तो उत्तर मिला 'मैं अच्छा मनुष्य बनने के लिए रामायण पढ़ता हूं।'

सिर्फ इतना ही नहीं इस बारे में एक दिलचस्प किस्सा भी सुनने को मिलता है कि इंडोनेशिया के पहले राष्ट्रपति सुकर्णो के समय में पाकिस्तान का एक प्रतिनिधिमंडल इंडोनेशिया की यात्रा पर था। इसी दौरान उसे वहां पर रामलीला देखने का मौका

.....जैसे भारत में ग्यारहवीं सदी में सूफीवाद का ढोंग रचकर अलबरूनी जैसे लोग घुस गये थे। वहां भी उसी दौरान ये लोग घुसने लगे। आरम्भ में समुद्री तटों पर जाकर सूफीवाद का ढोंग आरम्भ कर दिया। अरब मुस्लिम व्यापारी आना शुरू हो गये। इसके बाद मुसलमान व्यापारियों ने स्थानीय महिलाओं से शादी की, इसके बाद कुछ अमीर व्यापारियों ने सत्तारूढ़ और वहां के प्रतिष्ठित परिवारों से शादी करना शुरू किया। यानि वहां के व्यापारियों और प्रमुख राज्यों के राजाओं को मजहब की घूंट पिला दी। जब द्वीपों के राजा इस्लाम में चले गये तो आम नागरिक तो जाना तय थे। यानि तेरहवीं सदी के अंत तक, उत्तरी सुमात्रा में मजहब स्थापित कर दिया। इसके बाद 15वीं सदी में पुर्तगालियों ने इंडोनेशिया को जीत लिया। फिर डच आ गये। यानि कभी पुर्तगाली कभी डच कभी मजहबी सेना इन तीनों के बीच उनका मूल धर्म सनातन पिस गया। लेकिन इसमें कमाल ये हुआ कि उन पर मत तो थोपे गये पर वे अपनी संस्कृति नहीं थोप पाए। जैसे भारत में थोप दी थी। मसलन आज भी वहां के लोग अपनी मूल सनातन संस्कृति के काफी निकट हैं। इसलिए वहां का युवा कहता है हम युवा अपनी जावा संस्कृति को नहीं छोड़ते हैं। क्योंकि अगर हमने एक बार इसे खो दिया तो फिर ये लौटकर नहीं लाई जा सकेगी। .....

मिला। पाकिस्तानी लोग इससे हैरान थे कि एक इस्लामी गणतंत्र में रामलीला का मंचन क्यों होता है! यह सवाल उन्होंने सुकर्णो से भी किया। उन्हें फौरन जवाब मिला "रामायण हमारी संस्कृति है।"

मसलन वो मुसलमान बन गये पर अरबी संस्कृति के बजाय उन लोगों ने अपनी संस्कृति को जिन्दा रखा। यहाँ की तरह मंदिर तोड़कर उनपर गुम्बद नहीं बनाये। नतीजा आज भी वहां लोगों के नाम सुकर्णो, सुहार्तो, मेगावती, इंद्र, कृष्ण, विष्णु, सूर्य, राम, लक्ष्मण, आर्य, आदित्य, और धर्म, ऐसे नामों वाले तमाम लोग मिलेंगे। यहां की भाषा में संस्कृत के भी कई शब्द मिलते हैं। साथ ही हिन्दुओं के अतिप्राचीन मंदिर भी किसी को देखने हों तो इंडोनेशिया में बहुत संख्या में मिल जायेंगे।

अब इस पूरे प्रसंग को समझिये कि आखिर क्या रिश्ता है इंडोनेशिया और भारत का। खान-पान का, पहनावे का। राम-सीता और रामायण-रामलीला का। दरअसल ये पुरानी कहो या बहुत पुरानी बात है। इसके लिए लगभग 300 ईसा पूर्व चलते हैं। वह दौर, जब सम्राट् अशोक का राज था। उसी दौर में इंडोनेशिया के अंदर भी हिन्दू साम्राज्यों का विशाल राज्य था। साढ़े 17 हजार से ज्यादा द्वीप जुड़कर बने इंडोनेशिया में जावा और सुमात्रा सबसे बड़े द्वीप है।

शेष पृष्ठ 7 पर

अग्निहोत्र (यज्ञ) के सम्बन्ध मे वैज्ञानिक दृष्टिकोण

मनुष्य का स्वास्थ्य उसके भीतर विद्यमान शुद्ध रुधिर पर आश्रित है। रुधिर जितना शुद्ध होगा उतना ही व्यक्ति स्वस्थ होगा। और रुधिर जितना अशुद्ध होगा उतना ही व्यक्ति अस्वस्थ होगा। शरीर में रक्त का संचार हृदय से होता है। किन्तु अशुद्ध रक्त को शुद्ध करने का कारखाना फेफड़े हैं। जब पेट का खाना पचकर रुधिर होकर शरीर में लगता है वैसे यह रुधिर जिस पर स्वास्थ्य तथा जीवन निर्भर है फेफड़ों द्वारा शुद्ध होकर शरीर में संचार करता तथा हमें जीवन शक्ति प्रदान करता है। अगर फेफड़ो में अशुद्ध वायु पहुँचेगी तो व्यक्ति अस्वस्थ होगा। इसी तरह जब हम यज्ञ करते हैं तब घृत व सामाग्री में जो औषधियां डाली उनका अग्नि द्वारा सूक्ष्म तत्व इन खाली फेफड़ों को भर हमें घृत तथा सामाग्री की औषधियों का लाभ पहुँचाता है। यज्ञ का यह प्रत्यक्ष लाभ है जो वैधानिक और भौतिक लाभ है।

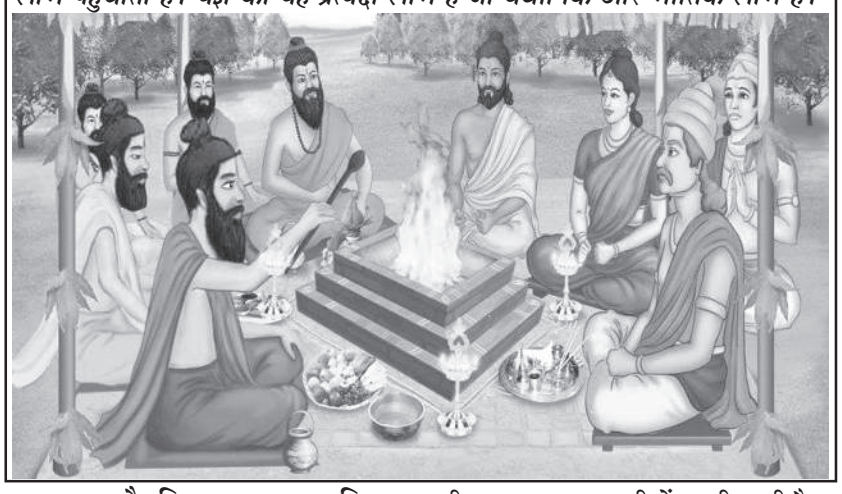

महषि दयानन्द सरस्वती जी ने प्रत्येक आर्य के लिए सिर्फ अपने घर में ही यज्ञ करने की बात नहीं कही, सार्वजनिक यज्ञ करने की भी बात कही है। जब घर-घर में नित्य यज्ञ हो और सामूहिक रूप से बड़े-बड़े यज्ञ हो तो आध्यात्मिक और भौतिक वातावरण शुद्ध पवित्र वायु से भर जाता है।

अग्नि में डाला हुआ पदार्थ नष्ट नहीं होता सूक्ष्म होकर फैल जाता है। अग्नि का काम स्थूल पदार्थ को सूक्ष्म रूप में परिवर्तित कर देना है। यज्ञ करते हुए अग्नि में घी डालते हैं वह नष्ट नहीं होता और हवन सामाग्री में अनेक उत्तम पदार्थ भी डाले जाते हैं, वह परमाणुओं में बदल जाता है, सारे वातावरण को शुद्ध कर देता है।

उदाहरणार्थ स्थूल मिर्च को अग्नि में डाले तो वह सारे वातावरण को दूषित कर देती है। छींक आना प्रारम्भ हो जाता है, क्योंकि आग का कार्य स्थूल वस्तु को तोड़कर सूक्ष्म कर देना है और वस्तु सूक्ष्म होकर परिमित स्थान में कैद न रहकर दूर-दूर असर करती है। और अग्नि में डालने से पदार्थ के गुण भी बदल जाता है। और उस पदार्थ का गुणों का भी विस्तार हो जाता है। अग्नि का कार्य स्थूल वस्तु को सूक्ष्म बनाकर परिणात्मक परिवर्तन कर देना भी है।

स्थूल पदार्थो के अग्नि द्वारा सूक्ष्म हो जाने पर उनका स्वास्थ्य पर प्रभाव

मनुष्य का स्वास्थ्य उसके भीतर विद्यमान शुद्ध रुधिर पर आश्रित है। रुधिर जितना शुद्ध होगा उतना ही व्यक्ति स्वस्थ होगा। और रुधिर जितना अशुद्ध होगा उतना ही व्यक्ति अस्वस्थ होगा। शरीर में रक्त का संचार हृदय से होता है। किन्तु अशुद्ध रक्त को शुद्ध करने का कारखाना फेफड़े हैं। जब पेट का खाना पचकर रुधिर होकर शरीर में लगता है वैसे यह रुधिर जिस पर स्वास्थ्य तथा जीवन निर्भर है फेफड़ों द्वारा शुद्ध होकर शरीर में संचार करता तथा हमें जीवन शक्ति प्रदान करता है। अगर फेफड़ों में शुद्ध तथा पोष्टिक वायु पहुँचेगी तो व्यक्ति स्वस्थ-सुन्दर- सुड़ोल होगा, अगर फेफड़ो में अशुद्ध वायु पहुँचेगी तो व्यक्ति अस्वस्थ होगा। इसी तरह जब हम यज्ञ करते हैं तब घृत व सामाग्री में जो औषधियां डाली जाती हैं तो उनका अग्नि द्वारा सूक्ष्म तत्व इन खाली फेफड़ों को भर हमें घृत तथा सामाग्री की औषधियों का लाभ पहुँचाता है। यज्ञ का यह प्रत्यक्ष लाभ है जो वैधानिक और भौतिक लाभ है।

यज्ञ द्वारा वैयक्तिक तथा सामाजिक वायु मंडल को शुद्ध करना

प्रत्येक व्यक्ति का निज आवास दूषित वायु से भरा रहता है। इतना ही नहीं कि उसमें कार्बन डाइआक्साइड भरी रहती है। इसके अलावा अनेक प्रकार के कीटाणु हर घर में मौजूद रहते हैं। अनेक घरों में शीलन की बदूब रहती है और शीलन से खांसी जुखाम व अंगों में अनेक प्रकार के दर्द पैदा हो जाते हैं। उनको दूर करने के लिए यज्ञ द्वारा शुद्ध वायु करनी पड़ती है। वायु कर कार्य तो संचरण करना है, इस दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति का अपने घर में यज्ञ करना केवल उसे ही लाभ नहीं पहुँचाता अपितु अपने अगल-बगल के वातावरण को भी शुद्ध करता है। वायु मडंल का शुद्ध होना व्यक्ति तथा समाज को स्वस्थता देकर आर्थिक बोझ को भी हल्का करता है।

कार्बन डाइऑक्साइड गैस

यज्ञ में समिधा जलाने से कार्बन डाइऑक्साइड जो पैदा होती है व निरा कार्बन डाइऑक्साइड नहीं होती है, उसमें धृत तथा सामाग्री में पड़ी अनेक रोगनाशक स्थूल औषधियों के अग्नि द्वारा सूक्ष्मीकृत परमाणु भी मिले होते हैं। क्योंकि रोग नाशक स्थूल औषधियों का सूक्ष्मीकरण अग्नि द्वारा कार्बन डाइऑक्साइड की हानि को दूर करने के लिए रोग नाशक औषधियों की प्रभूत मात्रा सामाग्री में डाली जाती है। यह तो स्पष्ट है कि औषधियों के विरल परमाणु ही रोगों को नष्ट करते हैं। इस बात को एलोपैथी-होम्योपैथी-आयुर्वेद सब स्वीकार करते हैं। वायु मडंल में अग्नि के अतिरिक्त अग्नि में स्वास्थ्यवर्धक वस्तुओं को डालने के अतिरिक्त कोई साधन नही है।

यज्ञ द्वारा वृष्टि की कमी को दूर करना

यज्ञ द्वारा वायु शुद्ध होती है, रोग के कीटाणुओं का नाश होता है। इसके अतिरिक्त अनावृष्टि के समय वृष्टि की कमी को दूर करना है। यज्ञ में घी का प्रयोग वर्षा लाने में सहायक होता है। घी के अणु वर्षा बरसाने में अपूर्व साधन है। पानी और घी दोनों ऐसे पदार्थ है जो सर्दी में जम जाते हैं और गर्मी में पिघल जाते हैं। यज्ञ में जब घी के अणु सूक्ष्म होकर ऊपर चढ़ते हैं तो वायु में डोलने वाले बादलों के तल के पास ही पहुँचकर स्वयं जम जाने में उनको भी जमाने और बरसाने का काम देते हैं। इसका अभिप्राय यह हुआ कि घी के परमाणु जब आसमान में चढ़कर बादलों के तले में पहुँचते हैं तब वहां की ठड़ के कारण वे जम जाते हैं।

घी के परमाणुओं के जमने के कारण उनके साथ सम्पर्क में आने वाले बादलों के वाष्प के कण भी घी के ठंड़े परमाणुओं की वजह से भाप की जगह पानी बन जात हैं, और बरस पड़ते हैं। आसमान में हर समय भाप के रूप में पानी रहता है। यज्ञ द्वारा आसमान में चढ़ने वाले घी के परमाणु भी होने के कारण वहां भी ठण्ड़ में जम जाते हैं, और साथ लगी सारी वाष्प को ठण्ड़ा होने का अर्थ है पानी का बरस पड़ना। इस प्रकार यज्ञ वर्षा में सहायक हैं।

यज्ञ की सामाग्री के सम्बन्ध में विचार

ऋषि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे सम्मुलास में यज्ञ की वैज्ञानिकता पर लिखते हैं जहां-जहां होम होता है वहां से दूर में स्थित पुरुष की नासिका में सुगन्ध का ग्रहण होता है और वैसै ही दुर्गन्ध का भी होता है। अग्नि के सामर्थ्य से केसर, कस्तुरी, सुगन्धित पुष्प और इतर आदि पदार्थों का भेदक शक्ति बनकर दुर्गन्ध वायु को बाहर निकालकर शुद्ध वायु का प्रवेश होता है।

1. सुगन्धित पदार्थ द्रव्य: कस्तुरी, केसर, अगर, तगर, चन्दन, जटामांसी, इलायची, तुलसी, जायफल, जावित्री, कपूर, कपूर कचरी, गुग्गुल, नागरमोथा, बालछड, नरकचूरा, सुगन्धवाला लवंग, दालचीनी आदि।

2. उत्तम पदार्थ: शुद्ध घी, दूध, फल, कंद, चावल, जौ, गेहूँ आदि।

3. मधुर पदार्थ: खांड, शहद, किसमिस, छुआरा आदि।

4. रोगनाशक औषधियां: गिलोय आदि।

5. समिधा: आम, बबूल, बरगद, गूलर, नाम, अशोक, पीपल, पलाश, चन्दन, देवदार आदि।

इसमें सन्देह नहीं है कि हर प्रकार की साम्रगी हर रोग का निवारण नहीं कर सकती। परन्तु अग्नि में औषधियां डालने से रोग का प्रतिकार हो सकता है। कहा जाता है कि हवन में फोमेल्डीहाइड पैदा होता है, गन्ध वाली गैस भी पैदा होती है किन्तु जो कीटाणुनाशक हैं। परन्तु साथ ही कार्बन डाइऑक्साइड भी तो पैदा होती है। सत्य तो यह है अग्नि जलने के समय जो रोगनाशक गैसें उत्पन्न होती हैं उन्हें उठाकर दूर-दूर तक आसमान में उठाकर चढ़ा देने का कार्य कार्बन डाइऑक्साइड ही करती है। अग्नि से उत्पन्न होकर वह इतनी उड़ान भरती है कि प्राय: देखा जाता है कि बड़े-बड़े यज्ञ कई दिन तक होते रहते हैं। तब यज्ञ जनित तत्वों को यह इतनी ऊचां उठा ले जाती है कि यज्ञ करते-करते आसमान बादलों से घिर जाता है और वर्षा होने लगती है।

वेद मंत्रों का उच्चारण

यज्ञ करते समय वेद मंत्रों के उच्चारण से आध्यात्मिक लाभ यह मिलता है कि ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त होता है। वेद कठांग्र रहते हैं और वैज्ञानिक लाभ यह होता है कि वेद मंत्रों के स्वर लहरियों का वायु मंडल में प्रसारण होता है। एक खास प्रकार के उच्चारण से ऐसी लहर पैदा होती है जिसमें रोग निवारण में सहायता मिलती है। वेद मंत्र वायु मंडल में नष्ट नही होते हैं और जहाँ-जहाँ भी यज्ञ होते रहते है उनमें आध्यात्मिक वातावरण पैदा होता है। क्योंकि जो भी हम सत्य व असत्य उच्चारण करते हैं वह शब्द उच्चारण के बाद समाप्त नहीं होते हैं, आकाश के वायु मंडल में रहते हैं और जहाँ-जहाँ उन शब्दों की क्रिया होती रहती है वहां-वहां प्रभावित करते हैं। इस प्रकार यज्ञ करने से हमें आध्यात्मिक, भौतिक व स्वस्थ्य शारीरिक लाभ मिलता है।

(नोट: इस लेख में डा0 सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार द्वारा रचित संस्कार चन्द्रिका ग्रन्थ से सहायता ली गयी है।)

- पं उम्मेद सिंह विशारद

गढ़ निवास, मोहकमपुर, देहरादून

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए ***मो.नं. 9650183335 पर*** सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की वैदिक रीति से व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं। ***- संयोजक***

बाल बोध

बच्चों के निर्माण में माता-पिता की महत्वपूर्ण भूमिका : केवल प्रताड़ना प्रेरणा नहीं बनती

मानव जीवन का प्रारंभिक काल होता है बचपन। बचपन बच्चों के हाथ मे नहीं होता, माता-पिता की प्रेरणा पर आधारित होता है- बचपन का बनना और बिगड़ना। बच्चे को बच्चा इसीलिए कहा जाता है क्योंकि उसे बचाना पड़ता है, वह स्वयं बचना नहीं जानता। बच्चे को आग में हाथ डालने में डर नहीं लगता और छोटा बच्चा सांप को भी खिलौना समझकर पकड़ लेता है। इसलिए उसे हर समय बचाना पड़ता है। क्योंकि बच्चा तो बच्चा ही होता है। बच्चे को माता-पिता की ममता और वात्सल्य की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। जिस तरह से किसी फूल को बाड़ लगाकर सुरक्षित करना पड़ता है वैसे ही बच्चे को भी संस्कारों की बाड़ लगाकर सुरक्षित करने की जरूरत होती है। बच्चों को बचपन में जो संस्कार माता-पिता से प्राप्त होते हैं वही संस्कार उनके जीवन को अंत तक पोषित करते हैं। बच्चे कोमल, पवित्र और एक कोरा कागज होते हैं, उन्हें जैसा वातावरण मिलता है वे वैसा ही आचरण करने लगते हैं। जैसे माता-पिता, परिवार के लोग बोलते हैं, सोचते हैं, आचरण करते हैं, वैसे ही बच्चे भी सीख जाते हैं। बच्चे सिखाने से कम और देखकर ज्यादा सीखते हैं। वैसे कोई भी बच्चा अपने जीवन में असफल होना नहीं चाहता, लेकिन अगर ऐसी स्थिति सामने आ भी जाए तो माता पिता को उसके मूल कारणों पर ध्यान देना चाहिए, बच्चे को ताना देकर उसके कोमल मन को कमजोर कभी ना बनाएं।

अर्थशास्त्र में कहा गया है कि पैसा एक अच्छा मित्र हो सकता है, अच्छा सेवक हो सकता है लेकिन बुरा मालिक भी हो सकता है। आप अपने पैसे को अच्छा सेवक बनाइए, अपने बच्चों को आवश्यकता के अनुसार पैसा दीजिए। नहीं तो बच्चे पैसे का दुरुपयोग करके संकट में पड़ जाते हैं, बुरी आदतों में पड़ जाते हैं, दुर्गुण दुर्व्यसनों में फंस जाते हैं, इसलिए बच्चे पैसा पाने के लिए अगर जिद भी करते हैं, पैर पटकते हैं, जमीन पर गिर जाते हैं, और कसम भी खाते हैं, वे कुछ भी करें लेकिन माता-पिता को उनकी जिद के सामने नहीं झुकना चाहिए, पर इतना जरूर करें कि उन्हें प्रेम से एकांत में बैठाकर उनका पक्ष भी सुने और उनका अपना पक्ष भी उन्हें समझाएं, उचित और उचित और अनुचित का भेद बताएं, अपने बच्चों के साथ आत्मीयता पैदा करें, दूरियां कम करें। इस तरह से बच्चों की जरूरत को जरूर समझें और उन्हें पूरा भी करें। लेकिन अनावश्यक पैसा उन्हें देने से परहेज करें वरना अतिरिक्त पैसा उन्हें बुराइयों में धकेल देगा और बच्चे अपनी शान और शौकत दिखाने के चक्कर में अपराध की दुनिया चले जाएंगे।

बच्चों का बचपन एक पौधे के समान होता है। पौधे में स्वयं विकसित होने की संपूर्ण क्षमता विद्यमान तो होती है लेकिन उपयुक्त पर्यावरण, सम जलवायु के अभाव में उसका समुचित विकास संभव नहीं होता। हम अपने घर का वातावरण ऐसा बनाएं जिससे बच्चों की प्रतिभा का चहुंमुखी विकास संभव हो सके। कुछ माता-पिता अपने बच्चों को कहते हैं कि तू हमारी नाक कटाएगा, हमें बर्बाद करके छोड़ेगा, हमारी बदनामी कराएगा, तू बुद्धू है, तेरा कम दिमाग है, तू सफल नहीं हो सकता, तू ऐसे ही धक्के खाता फिरेगा, आदि-आदि कटु वाक्य माता-पिता अपने बच्चों को अक्सर कह देते हैं। किन्तु माता-पिता को यह सोचना चाहिए कि कोई भी बच्चा असफल होना नहीं चाहता, सभी बच्चों के सपने सुंदर होते हैं, उनके मन में अंकुरण होता है, वे किसी उद्यान के फूल बन सकते हैं, जिनकी सुंदरता और सुगंध पूरे विश्व में फैल सकती हैं और पूरे वातावरण को महका सकती है। इसलिए समय-समय पर माता-पिता को बच्चों का मनोबल बढ़ाना चाहिए, उन्हें प्रेरित करना चाहिए, क्योंकि प्रताड़ना कभी प्रेरणा नहीं बनती। आपके शाबाशी के दो शब्द, प्रेम और दुलार से पीठ थपथपा देना प्रेरणा जरूर बन सकती है।

जैसे कुम्हार अपने घड़े को आकार देता है तो अंदर से हाथ का सहारा देता है और ऊपर से चोट मारता है, तभी घड़े के सारे खोट निकलते हैं और घड़ा सुंदर बनता है, ऐसे ही बच्चों को अंदर से उत्साह दीजिए और उनकी गलतियों को देखकर अगर आप प्रताड़ना भी करते हैं, तो इस तरह से प्रताड़ना प्रताड़ना नहीं बल्कि प्रेरणा बन जाती है।

आज के समय में चारों तरफ आधुनिकता की चकाचौंध है, बनावट, सजावट और दिखावट के बाजार सजे हुए हैं। बड़े बड़े लुभावने विज्ञापन प्रसारित हो रहे हैं, आगे बढ़ने की होड़ लगी हुई है। छल-कपट और भ्रष्टाचार लोगों के सिर चढ़कर बोल रहा है। ऐसे में बच्चों को इस विषैली हवा से बचाना भी माता पिता की बड़ी जिम्मेदारी है। क्योंकि संग का रंग बड़ी जल्दी असरदार सिद्ध होता है। बच्चों के दिशाहीन होने में पैसे का भी बहुत महत्व है। अर्थशास्त्र में कहा गया है कि पैसा एक अच्छा मित्र हो सकता है, अच्छा सेवक हो सकता है लेकिन बुरा मालिक भी हो सकता है। अपने पैसे को अच्छा सेवक बनाइए, अपने बच्चों को आवश्यकता के अनुसार पैसा दीजिए। नहीं तो बच्चे पैसे का दुरुपयोग करके संकट में पड़ जाते हैं, बुरी आदतों में पड़ जाते हैं, दुर्गुण दुर्व्यसनों में फंस जाते हैं, इसलिए बच्चे पैसा पाने के लिए अगर जिद्द भी करते हैं, पैर पटकते हैं, जमीन पर गिर जाते हैं, और कसम भी खाते हैं,

- शेष पृष्ठ 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

सर्व प्रथम आचार्य धनन्जय जी, गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम, श्री शिवा शास्त्री जी, श्री राजवीर शास्त्री जी, श्री दिनेश शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें श्री अशोक कुमार जी, श्री प्रवेश गोयल जी, श्री विपिन भल्ला, श्री राजीव चौधरी जी, श्रीमती अनु वासुदेवा जी, श्रीमती नीना जी इत्यादि ने यजमान बनकर यज्ञ में आहुति दी। इस यज्ञ में उपस्थित सभी अधिकारी और कार्यकर्ताओं ने भी आहुति प्रदान कर सबके लिए मंगल कामना की।

यज्ञ के उपरांत सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने सभी अधिकारियों और कार्यकर्ताओं को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती जी के निर्वाण को स्मरण करते हुए कहा कि 30 अक्टूबर 1883 को सायंकाल एक साथ दो सूर्य अस्त हुए थे, एक आसमान में और दूसरे सूर्य महर्षि दयानंद सरस्वती थे। जिन्होंने अज्ञान, अविधा और पाखंड के अंधेरे को दूर किया और अपने वैदिक ज्ञान के सूर्य की किरणों से जगत को प्रकाशित किया। प्रधान जी ने महर्षि के अधूरे कार्यों को पूर्ण करने के लिए सबको प्रेरणा और संकल्प धारण करने के लिए प्रेरित किया।

इसके उपरांत सभा के उपप्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य जी, श्री शिवकुमार मदान जी, श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, केंद्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश चड्ढा जी, उप प्रधाना श्रीमती उषा किरण जी, सभा के मंत्री श्री शिवशंकर गुप्ता जी, श्री सुरेशचन्द्र गुप्ताजी, श्री सुखवीर आर्य जी, श्री कृपाल सिंह आर्य जी आदि सभी महानुभावों ने उपस्थित कार्यकर्ताओं को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती जी को स्मरण किया।

सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी सभा के कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी की ओर से तथा अपनी ओर सभी को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए महर्षि दयानंद जी के निर्वाण को स्मरण करते हुए कहा कि महर्षि को कालकूट विष तो दिया ही गया था लेकिन उनके साथ षड्यंत्र भी रचा गया था। क्योंकि महर्षि से अंग्रेज सरकार डरती थी, महर्षि का सत्य बोलना, सत्य करना, सत्य का उपदेश करना उस समय के शासकों को पसंद नही था। अंग्रेजों की ओर से महर्षि के लिए आए प्रस्ताव की चर्चा करते हुए महामंत्री जी ने बताया कि अंग्रेजों ने स्वामी जी को कहा था कि आप अपना प्रचार प्रसार तो बे रोक-टोक कीजिए, लेकिन थोड़ा सा अंग्रेजी शासन की प्रशंसा भी कर दिया कीजिए। थोड़ी सी प्रार्थना अंग्रेजी शासन की बढ़ोतरी के लिए भी कर दिया कीजिये। सत्य की राह पर अडिग स्वामी जी चाहते तो आम व्यक्ति की भांति इस प्रस्ताव पर मौन भी हो सकते थे, लेकिन महर्षि ने अंग्रेजों को कहा था कि मैं तो चाहता हूं कि जितनी जल्दी हो विदेशी राज्य भारत से विदा हो और मेरी प्रार्थना भी ईश्वर से यही है कि विदेशी शासन भारत से शीघ्र अति शीघ्र हट जाए। ऐसे महामानव महर्षि की हत्या के षड्यंत्र में कही न कहीं अंग्रेजी सरकार का भी हाथ अवश्य था। महामंत्री जी ने सभी कार्यकर्ताओं से कहा कि प्रत्येक कार्यकर्ता को महर्षि का जीवन अवश्य पढ़ना चाहिए और उनसे प्रेरण लेकर अपने जीवन को गरिमा प्रदान करनी चाहिए।

महामंत्री जी के उद्बोधन के बाद कार्यालय अध्यक्ष श्री अशोक कुमार जी ने सभी अधिकारियों का दीपावली की शुभकामना देने के लिए और गरिमामयी उपस्थिति के लिए धन्यवाद किया। सभा प्रधान और सभी अधिकारियों ने आर्य समाज दिल्ली की समस्त सेवा इकाइयों के कार्यकर्ताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया और हार्दिक शुभकामनाओं सहित उपकृत किया। शान्ति पाठ के बाद जलपान एवं ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ

प्रथम पृष्ठ का शेष महर्षि दयानंद सरस्वती का 138....

सहयोग किया।

इसके उपरान्त आर्य समाज जनकपुरी सी ब्लॉक की आर्य वीरांगनाओं ने बहुत ही सुंदर भजन सुनाएं। भजनों के इस क्रम में पंडित दिनेश आर्य जी व उनके साथी लक्ष्य आर्य, मोहित आर्य, आशीष आर्य तथा करण आर्य ने सामूहिक भजन सुनाए। आर्य समाज ग्रेटर कैलाश - 1 द्वारा संचालित अमृतपाल आर्य शिशुशाला के छात्र पीयूष ने एक कविता पाठ किया। छात्र नितिन ने महर्षि देव दयानंद के जीवन का परिचय दिया तथा छात्रा ईशा ने बहुत ही सुंदर कविता सुनाई। श्री विनय आर्य जी की सुपुत्री वर्चसी आर्य ने प्रेरक कविता का पाठ किया।

रतन चंद आर्य पब्लिक स्कूल सरोजिनी नगर की छात्रा अंशिका गुप्ता व दिशा शर्मा ने बहुत ही उपयोगी वैदिक नाती आर्यमन ने आर्यसमाज के आधार, पॉच नियमों का तथा प्रार्थना - उपासना के पहले व दूसरे मन्त्र का पाठ किया। और उनके पौते अथर्व चौहान ने स्वाथ्य लाभ के लिए मन्त्रों द्वारा उपस्थित आर्यजनों को शुभकामनाएं दी।

पंडित लेखराम जी की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी के त्यागमय जीवन पर आधारित नाटिका से प्रेरणा देने हेतु आर्य गुरुकुल रानी बाग तथा सैनिक विहार के ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणियों ने प्रस्तुति देकर सबको मन्त्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम को समापन की ओर बढ़ाते हुए, एक साधारण व्यक्ति चाहे वह पुरुष हो या महिला में कुछ विशेष गुण होते हैं, लेकिन महर्षि दयानंद सरस्वती जी बहुगुण सम्पन्न व विलक्षण ऋषि थे, उनके गुणों की चर्चा करते हुए रेशमा कैम्प के आर्य बच्चों ने नीचे पंक्ति बनाकर संकल्प लिया कि हम आर्य समाज के बच्चे, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओं को दिल से मानते हैं, हमारे मम्मी-पापा, भाई-बहन सब मिलकर संध्या, हवन करते हैं, वेद पढ़ते हैं, हम भी सुनते हैं। आज हम महर्षि के 138वें निर्वाण दिवस पर संकल्प करते हैं कि हम सदा आर्य समाज के नियमों के अनुसार चलेंगे, महर्षि के सपनों को साकार करेंगे, स्वयं आर्य बनेंगे और सबको आर्य बनाएंगे। ईश्वर हमें शक्ति दे कि हम अपने इस संकल्प को पूरा करें।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुरेन्द्र रैली जी कार्यकारी प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य ने की। अध्यक्षीय भाषण देते हुए उन्होंने सभी बच्चों और उपस्थित महानुभावों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने समस्त कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प धारण करने की बात कही। आर्यसमाज की विचारधारा से ही विश्व में ज्ञान का प्रकाश फैलेगा अंधेरों में ज्ञान की ज्याति जलाने के लिए वेद की ऋचाओं को पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना बहुत जरूरी है।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के कार्यकारी प्रधान श्री सुरेन्द्र रैली जी ने महर्षि दयानन्द जी के 138वें निर्वाण दिवस पर दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों और शिक्षण संस्थाओं की ओर से महर्षि को भावपूर्ण श्रद्धांजलि प्रदान की तथा सभी को दीपावली की शुभकामनाएं देकर धन्यवाद किया। आर्य समाज जनकपुरी के बच्चों द्वारा शांति गीत और शांति पाठ से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में लगभग 95 बच्चों ने भाग लेकर इसे सफल किया, उन बच्चों और उनके अविभावकों का बहुत-बहुत धन्यवाद। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री अजय सहगल जी, श्री राजीव चौधरी जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री हरिओम बंसल जी, आ. अनिल शास्त्री जी, श्रीमती वीना आर्या जी, श्रीमती तृप्ता शर्मा जी, श्रीमती नीरज मैंदीरता जी, श्रीमती अर्चना पुष्करणा जी, श्री राजु आर्य, श्री कृष्ण आर्य एवं श्री रोशन आर्य ने अपना सम्पूर्ण योगदान दिया। गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम, हरि नगर, आर्य गुरुकुल रानी बाग, आर्य गुरुकुल सैनिक विहार, एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पश्चिम पंजाबी बाग, तथा महाशय धर्मपाल मीडिया सेन्टर, आर्य संदेश टी. वी. के सभी अधिकारियों व सहयोगियों का हार्दिक धन्यवाद।

- आर्य सतीश चड्डा, महामन्त्री

आर्ष गुरुकुल शिक्षा अभियान द्वारा भारत-भूटान सीमा पर गुरुकुल की स्थापना

4 नवंबर 2021, शुभ दीपावली के दिन असम आर्य प्रतिनिधि सभा का एक दल सामरांग नामक भारत-भूटान सीमान्त पर आर्ष गुरुकुल शिक्षा अभियान के द्वारा संचालित होने वाले गुरुकुल के कार्यालय के स्थापना कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए पहुंचा। इस दल में असम सभा के प्रधान श्री महेंद्र सिंह राजपूत जी, आर्य समाज गुवाहाटी के सदस्य श्री अशोक कुमार गुप्ता, प्रचारक श्री अमृष आर्य जी तथा सभा मन्त्री श्री प्रभाकर शर्मा प्रमुख थे।

सभा प्रधान श्री महेंद्र सिंह राजपूत जी ने गुरुकुल कार्यालय का उद्घाटन किया तथा झंडोत्तोलन श्री अमित आर्य, गुरुकुल के संस्थापक एवं श्री फोलिनसेन साहू द्वारा किया गया। इस अवसर पर यज्ञ श्री प्रभाकर शर्मा एवं अमृष आर्य जी द्वारा किया गया। असम सभा की ओर से श्री महेंद्र सिंह राजपूत जी एवं श्री प्रभाकर शर्मा ने उपस्थित स्थानीय लोगों को संबोधित करते हुए वर्तमान समय में पूर्वोत्तर क्षेत्र में गुरुकुल की आवश्यकता पर अपना मन्तव्य रखा। इसके बाद गुरुकुल की भूमि दर्शन के लिये भी जाना हुआ जो कि कार्यालय से लगभग 3 किमी. की दूरी पर हिमालय की तलहटी पर स्थित है ।

इसके बाद सभा का यह दल आर्य समाज मंदिर बोरेंगाजुली तथा डी.ए.वी. हाई स्कूल बोरेंगाजुली का निरीक्षण करने भी पहुंचे, जहां श्री जीतू महानंदिया, अध्यक्ष, एस.एम.सी. डी.ए.वी. हाई स्कूल, श्री भवानी शंकर शर्मा जी (सदस्य, आर्य समाज, बोरेंगाजुली), श्री सुबोल नाग जी (स्कूल प्रधानाध्यापक) तथा समाज के अन्य सदस्य उपस्थित रहे तथा स्कूल के उत्थान के बारे में चर्चा की।

- मंत्री, असम आर्य प्र. स.

डीएवी पब्लिक स्कूल, सैक्टर 14, फरीदाबाद शूटिंग रेंज का उद्घाटन

डीएवी पब्लिक स्कूल, सैक्टर 14, फरीदाबाद में 4 अक्टूबर 2021 को स्कूल की शूटिंग रेंज का उद्घाटन डीएवी कॉलेज प्रबंध समिति, नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. पूनम सूरी ने कई गणमान्य व्यक्तियों श्री एस.के. शर्मा, निदेशक, प्रकाशन विभाग, डॉ. सिंह, निदेशक पब्लिक स्कूल, श्री अजय सहगल, सचिव, डॉ. सतीश आहूजा, सेवानिवृत्त प्राचार्य, डीएवी कॉलेज, एनएच 3, फरीदाबाद, श्री एसएस चौधरी, क्षेत्रीय निदेशक, जोनल और श्री के.एल. खुराना, अध्यक्ष, आर्य प्रदेशिक प्रतिनिधि उपसभा की उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर स्कूल की अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त छात्रा सुश्री श्वेता चौधरी भी उपस्थित थीं। सभा को संबोधित करते हुए, माननीय प्रधान जी ने कहा कि डीएवी पूरे भारत से डीएवी संस्थानों के 34 लाख छात्रों में से 100 कुशल क्रिकेट खिलाड़ियों का चयन करने की योजना बना रहा है। इन 100 क्रिकेटरों को सीधे महान क्रिकेटर कपिल देव द्वारा प्रशिक्षित किया जाएगा जो खुद डीएवी के पूर्व छात्र हैं। वह दिन दूर नहीं जब सभी डी ए वी से मिलकर एक पूरी राष्ट्रीय क्रिकेट टीम बन जाएगी। *- प्रधानाचार्या*

Makers of the Arya Samaj : Maharishi Dayanand Saraswati

Continue From Last issue

"Let us send some bad woman to his place," they said. "She will go there and cause a disturbance. We shall be near at hand, and as soon as the woman gives the signal we shall go and help her then we shall be able to tell the people that Swami Dayanand is not a man of good character." But, fortunately they did not succeed in their plans. Indeed, Swami defeated them in more ways than one, for he succeeded in converting the woman to a better life.

Swami Dayanand had the good of his country at heart. He wanted to make India better and happier when he saw that his countrymen were in distress, he felt much pained. He spent days and nights thinking out how he could improve their condition.

He was, however, particularly in touch with the Hindus, and tried his best to improve their condition. This, he felt, could only be done if the Hindus were educated. So he asked people to start pathshalas and schools, gurukulas and colleges. While at Kanpur he came to know two rich men. He asked them, "Why do you waste money on constructing temples? If you were to spend this money on opening schools, orphanages, and widows' homes, the country would profit immensely."

In the same way he met a very rich man at Farukhabad. He was about to construct a magnificent temple at a cost of thousands of rupees. "What good will it do to you or to your country?" asked Swami Dayanand. "It is not use building temples. They do not make anybody happy." These words of Swami Dayanand had a great effect. The rich man at once converted the temple into a pathshala. It was the passion of the Swami's life to educate his countrymen. He himself tried to do much in this direction. For instance, he delivered lectures and held discourses for this purpose. He wrote many books and taught many students for the same reason. He spent all his life in educating people. It is no wonder that soon after his death the Arya Samaj founded a college in his memory. This is the Dayanand Anglo Vedic College of Lahore, which was founded in 1886.

Swami Dayanand was very keen on social reform. In this respect he did untold good for his countrymen. It is true he was misunderstood in his own day, but now people admire him for his courage and foresight. They are now often heard to say, "But for him we should have remained ignorant and backward. It was the tenderness of

"It is not use building temples. They do not make anybody happy." These words of Swami Dayanand had a great effect. The rich man at once converted the temple into a pathshala. It was the passion of the Swami's life to educate his countrymen. He himself tried to do much in this direction. For instance, he delivered lectures and held discourses for this purpose. He wrote many books and taught many students for the same reason. He spent all his life in educating people. It is no wonder that soon after his death the Arya Samaj founded a college in his memory. This is the Dayanand Anglo Vedic College of Lahore, which was founded in 1886.

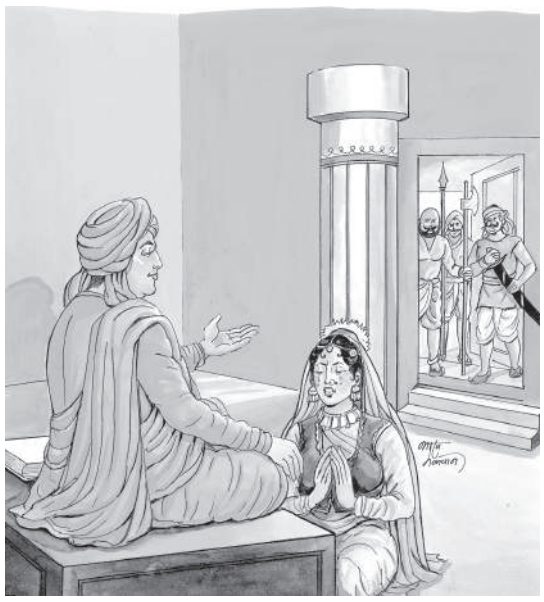

his heart that was responsible for all this good work. He felt extremely pained to see the helpless condition of widows and orphans. Through him orphanages and widows' homes were established in many places."

Swami Dayanand knew that India was an agricultural country and required good bulls and cows. Bulls could be useful in ploughing the fields and cows could yield milk. But he felt that the slaughter of cows was doing much harm.

To be continued.....

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

संस्कृत वाक्य प्रबोध

राजसभाप्रकरणम्

गतांक से आगे - संस्कृत	हिन्दी
499. तिष्ठ देवदत्त! त्वया सह गच्छामि राजसभाम्।	ठहर देवदत्त! तेरे साथ मैं भी राजसभा को चलता हूँ।
500. सभाशब्दस्य कः पदार्थः?	सभा शब्द का क्या अर्थ है?
501. या सत्यासत्यनिर्णयाय प्रकाशयुक्ता वर्त्तते।	जो सच झूठ का निर्णय करने के लिए प्रकाश से सहित हो।
502. तत्र कति सभासदः सन्ति?	वहां कितने सभासद् हैं?
503. सहस्रम्।	हजार।
504. या मम ग्रामे सभास्ति तत्र खलु पञ्चशतानि सभासदः सन्ति।	जो मेरे गांव में सभा है उसमें तो पांच सौ सभासद् हैं।
505. इदानीं सभायां कस्य विषयस्योपरि विचारो विधतव्यः?	इस समय सभा में किस विषय पर विचार करना चाहिये?
506. युद्धस्य।	युद्ध अर्थात् लड़ाई का।
507. तेन सह युद्धं कर्त्तव्यं न वा?	उसके साथ युद्ध करना चाहिये वा नहीं?
508. यदि कर्त्तव्यं तर्हि कथम्?	यदि करना चाहिये तो कैसे?
509. यदि स धर्मात्मा तदा तु न कर्त्तव्यम्।	यदि वह धर्मात्मा हो तब तो उससे युद्ध करना योग्य नहीं।
510. पापिष्ठश्चेत्तर्हि तेन सह योद्धव्यमेव।	और जो पापी हो तो उससे युद्ध करना ही चाहिये।
511. सोऽन्यायेन प्रजां भृशं पीडयत्यतो महापापिष्ठः।	वह अन्याय से प्रजा को निरन्तर पीड़ा देता है, इस कारण से वह बड़ा पापी है।
512. एवं चेत्तर्हि शस्त्रास्त्राप्रक्षेपयुद्ध कुशला बलिष्ठा कोश धान्यादिसामग्री सहिता सेना युद्धाय प्रेषणीया।	यदि ऐसा है तो शस्त्र-अस्त्र चलाने में और युद्ध में कुशल बड़ी लड़नेवाली,खजाना और अन्नादि सामग्री सहित सेना युद्ध के लिये भेजनी चाहिये।
513. सत्यमेवात्र वयं सर्वे सम्मतिं दद्मः।	सच ही है, हम सब लोग सम्मति देते हैं।
514. इदानीं कस्यां दिशि कैः सह युद्धं प्रवर्त्तते?	इस समय किस दिशा में किन के साथ युद्ध हो रहा है?
515. पश्चिमायां दिशि यवनैः सह हरि-वर्षस्थानाम्।	पश्चिम दिशा में मुसलमानों के साथ हरिवर्षस्थ अर्थात् यूरोपियन अंग्रेज लोगों का।
516. पराजिता अपि यवना अद्याप्युपद्रवं न त्यजन्ति।	हारे हुए मुसलमान लोग अब भी उपद्रव नहीं छोड़ते।
517. अयं खलु पशुपक्षिणामपि स्वभावोऽस्ति यदा कश्चित्तद्गृहादिकं ग्रहीतुमिच्छेत् तदा यथाशक्ति युध्यन्त एव।	यह तो पशु-पक्षियों का भी स्वभाव है कि जब कोई उनके घर आदि को छीन लेने की इच्छा करता है तब यथाशक्ति युद्ध करते अर्थात् लड़ते ही हैं।

क्रमशः - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

प्रेरक प्रसंग

एक आग्नेय पुरुष : स्वामी योगेन्द्रपाल

आप आर्यसमाज की दूसरी पीढ़ी के शीर्षस्थ विद्वानों तथा निर्माताओं में से एक थे। जिन संन्यासियों ने आर्यसमाज को अपने लहू से सींचा है, स्वामी श्री योगेन्द्रपालजी उनमें से एक थे। आपको आर्यसमाज की प्रथम पीढ़ी के महापुरुषों के सत्संग का और उनके साथ कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जिन प्राणवीरों ने पण्डित लेखरामजी आर्यपथिक के वीरगति पाने पर उनके मिशन के लिए अपनी जवानियाँ भेंट कर दी, स्वामी योगेन्द्रपाल उनमें से एक थे। आज आर्यसमाज में उनके नाम और काम की कोई चर्चा ही नहीं करता। अभी-अभी आर्यसमाज का जो इतिहास छपा है, उसमें भी उनका नाम न पाकर मुझे बहुत मानसिक कष्ट हुआ।

गत तीस वर्षों से मैं तो यदा-कदा अपने लेखों में उनकी चर्चा करता आया हूँ। मैंने अपनी पुस्तकों में उनका उल्लेख भी किया है। एक बार सम्भवतः 'आर्य सन्देश' में दिवंगत प्रिंसिपल कृष्णचन्द्रजी सिद्धान्तभूषण ने भी उनके एक ऐतिहासिक लेख पर कुछ लिखा था।

जिन पुराने आर्यों को उनके सम्बन्ध में जो कुछ ज्ञात है, वे मुझे लिखें तो उनका एक छोटा-सा जीवन-चरित्र ही प्रकाशित कर दिया जाए। मैं समझता हूँ कि यह मेरा भी अपराध है कि मैंने उनके जीवन की सामग्री की खोज बीस वर्ष पूर्व नहीं की। तब तक दीनानगर, लेखराम नगर (कादियाँ) व अमृतसर के अनेक आर्य बुजुर्ग जीवित थे। इन्हें स्वामीजी के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त रहा। श्री पण्डित गंगाप्रसादजी उपाध्याय भी ऐसे महानुभावों में से एक थे, जिन्हें स्वामी श्री योगेन्द्रपालजी के अदम्य उत्साह से प्रेरणाएँ प्राप्त हुई।

स्वामी योगेन्द्रपालजी का जन्म आर्यसमाज के ऐतिहासिक नगर, दीना नगर, जिला गुरदासपुर (पंजाब) में हुआ था। प्रतीत होता है कि उनका पूर्वनाम भी योगेन्द्रपाल ही था। उनके माता-पिता व कुल के सम्बन्ध में कोई जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी। जब महर्षि दयानन्द गुरदासपुर पधारे तब पौराणिक लोग दीनानगर से एक पण्डित को उनसे शास्त्रार्थ करने के लिए लाये थे। ऋषिजी के उपदेशामृत से गुरदासपुर व आसपास के लोगों पर वैदिक धर्म की गहरी छाप लगी। दीनानगर में भी शीघ्र ही आर्यसमाज स्थापित हो गया। स्वामी योगेन्द्रपाल-जैसे उत्साही मेधावी युवक पर ऋषि के क्रान्तिकारी विचारों व तेजोमय जीवन का ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने गृह त्याग दिया।

युवक योगेन्द्रपाल उ. प्र. की ओर चले गये। कहाँ-कहाँ गये, कहाँ-कहाँ विद्या प्राप्त की, इसका कुछ पता नहीं चला। संन्यास लेकर वे दीनानगर लौटे। किससे संन्यास लिया, यह भी ज्ञात नहीं हो सका। ***- क्रमशः***

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

पृष्ठ 2 का शेष

इण्डोनेशिया : हिन्दू धर्म में वापस ....

यह वह दौर था जब इस विशाल क्षेत्र को एशिया नहीं बल्कि वृहद् भारत कहा जाता था। उस दौर में समंदर के रास्ते यहाँ के व्यापारी वहां अपना माल लाते-ले जाते थे। उसी दौरान वहां बौद्ध मत भी पहुंचा।

सातवीं सदी के आसपास तक यहाँ के श्रीविजय साम्राज्य की पूरे दक्षिण-पूर्व एशिया में इनकी तूती बजती थी। समुन्द्र पर और उससे होने वाले कारोबार पर तो जैसे इनका राज था। और अमीरी की वजह भी। आप श्रीविजय का मतलब निकालिए। श्री माने लक्ष्मी, विजय माने जीत। ये लक्ष्मी आती थी सुमात्रा और मलय प्रायद्वीप के बीच स्थित मलक्का जलडमरूमध्य से। चीन की तरफ जाने वाले जहाजों का यही रास्ता था। हालाँकि इसी दौरान यहाँ बौद्ध मत को मानने वाले शैलेंद्र साम्राज्य का भी शासन रहा। क्योंकि इस काल में यहाँ बने विशाल बौद्ध स्तूप आज भी यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज साइट है। फिर जब वहां श्रीविजय साम्राज्य आया, तो ये जावा चले आए। कुछ ये भी कहते हैं कि इसके सिर पर श्रीविजय साम्राज्य का हाथ था। बताया जाता है कि ग्यारहवीं सदी में चोल वंश तमिलनाडु के राजा राजेंद्र चोल ने समंदर के रास्ते श्रीविजय साम्राज्य पर धावा बोल दिया था। उसके कुछ हिस्सों को जीत भी लिया। राजेंद्र चोल ने इंडोनेशिया और मलेशिया के कई हिस्सों पर हमला किया। चोलों ने श्रीविजय साम्राज्य की राजधानी कादरम को भी जीत लिया। इसके बाद ही ये साम्राज्य खत्म हो गया।

इसके बाद वर्णन मिलता है माजापाहित साम्राज्य का। ये बहुत ताकतवर साम्राज्य था। हिन्दू और बौद्ध धर्म, दोनों मानता था। शैव भी थे, वैष्णव भी थे और बौद्ध भी थे। राजा को तीनों का अवतार समझा जाता था। इस वंश का सबसे अच्छा समय आया 14वीं सदी में। इस दौरान उसने खूब दूर-दूर पैर पसार लिए। ये साम्राज्य इंडोनेशिया, मलेशिया, थाइलैंड, ब्रूनेई सब जगह फैल गया था। इंडोनेशिया के इतिहास में इससे ज्यादा ताकतवर कोई साम्राज्य नहीं हुआ।

अब हुआ क्या! जैसे भारत में ग्यारहवीं सदी में सूफीवाद का ढोंग रचकर अलबरूनी जैसे लोग घुस गये थे। वहां भी उसी दौरान ये लोग घुसने लगे। आरम्भ में समुद्री तटों पर जाकर सूफीवाद का ढोंग आरम्भ कर दिया। अरब मुस्लिम व्यापारी आना शुरू हो गये। इसके बाद मुसलमान व्यापारियों ने स्थानीय महिलाओं से शादी की, इसके बाद कुछ अमीर व्यापारियों ने सत्तारूढ़ और वहां के प्रतिष्ठित परिवारों से शादी करना शुरू किया। यानि वहां के व्यापारियों और प्रमुख राज्यों के राजाओं को मजहब की घूंट पिला दी। जब द्वीपों के राजा इस्लाम में चले गये तो आम नागरिक तो जाना तय थे। यानि तेरहवीं सदी के अंत तक, उत्तरी सुमात्रा में मजहब स्थापित कर दिया।

इसके बाद 15 वीं सदी में पुर्तगालियों ने इंडोनेशिया को जीत लिया। फिर डच आ गये। यानि कभी पुर्तगाली कभी डच कभी मजहबी सेना इन तीनों के बीच उनका मूल धर्म सनातन पिस गया। लेकिन इसमें कमाल ये हुआ कि उन पर मत तो थोपे गये पर अपनी संस्कृति नहीं थोप पाए। जैसे भारत में थोप दी थी। मसलन आज भी वहां के लोग अपनी मूल सनातन संस्कृति के काफी निकट हैं। इसलिए वहां का युवा कहता है हम युवा अपनी जावा संस्कृति को नहीं छोड़ते हैं। क्योंकि अगर हमने एक बार इसे खो दिया तो फिर ये लौटकर नहीं लाई जा सकेगी। यही कारण है कि जब भी वहां को मजहबी कट्टरपंथ देखता है तो अपनी मूल संस्कृति सनातन में लौट आता है। उन लोगों ने इसे बचाकर सहेजकर शायद इसी दिन के लिए रखा है कि क्या पता कब कोई सुकमावती सुकर्णोपुत्री वापिस लौट आये।

- सम्पादक

पृष्ठ 4 का शेष

बच्चों के निर्माण में माता-पिता .....

वे कुछ भी करें लेकिन माता-पिता को उनकी जिद्द के सामने नहीं झुकना चाहिए, पर इतना जरूर करें कि उन्हें प्रेम से एकांत में बैठाकर उनका पक्ष भी सुनें और उनका अपना पक्ष भी उन्हें समझाएं, उचित और अनुचित का भेद बताएं, अपने बच्चों के साथ आत्मीयता पैदा करें, दूरियां कम करें। इस तरह से बच्चों की जरूरत को जरूर समझें और उन्हें पूरा भी करें। लेकिन अनावश्यक पैसा उन्हें देने से परहेज करें वरना अतिरिक्त पैसा उन्हें बुराइयों में धकेल देगा और बच्चे अपनी शान और शौकत दिखाने के चक्कर में अपराध की दुनिया चले जाएंगे।

दुनिया में हर व्यक्ति अपनी संपत्ति के प्रति सजग रहता है पर उसकी असली संपत्ति तो उसके अपने बच्चे होते हैं। बच्चों को सफलता की राह पर अग्रसर करने के लिए उन्हें साधन सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ-साथ अपने व्यस्त जीवन में से बच्चों के साथ बैठने का समय भी अवश्य निकालिए। बच्चों के अंदर अच्छे गुण रोपने के लिए भाषण की जरूरत नहीं है, उनके साथ बैठकर आचरण प्रस्तुत करने से ज्यादा प्रभाव पड़ता है। घर में माता-पिता का व्यक्तिगत व्यवहार ही बच्चों को सही दिशा प्रदान करता है। आजकल बच्चे अपने मां-बाप का सम्मान नहीं करते, इस विषय को लेकर लगातार शोध हो रहे हैं कि ऐसा क्या किया जाए कि बच्चे संस्कारी बनें। अब प्रश्न उठता है कि हम बच्चों को कैसे संस्कार दें जिससे वे बड़ों को आदर देना सीख जाए। सच तो यह है कि जो पहले बोया जाता है बाद में वही काटा जाता है। हमारे द्वारा बोया ही ऐसा जाना चाहिए था कि जब फसल सामने आए तो हमें प्रसन्नता दे सके। मतलब यह है कि बच्चों को बचपन में ही अपनी संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों से परिचित कराया जाए, जिससे वे बड़े होकर अपने माता-पिता और बड़े बुजुर्गों का सम्मान कर सकें।

आजकल ऐसा हो रहा है कि मां बाप अपने बच्चे को 20-25 वर्ष तक पाल पोसकर बड़ा करते हैं, लेकिन 20 दिन की बुरी संगति अगर उन्हें मिल जाती है तो वे रावण बन जाते हैं। इसलिए अपने बच्चों को राम बनाने की कोशिश करें और इसके लिए पहले स्वयं को संभालिए और सही तरीके से संस्कार दीजिए। इसके लिए हमें अपने घर में इस तरह का वातावरण बनाना पड़ेगा जिससे बच्चे आगे बढ़कर वैदिक धर्म संस्कृति और संस्कारों को अपनाएं, अपना, अपने कुल और अपने देश का नाम रोशन करें

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज खजूरी खास
बी ब्लाक, दिल्ली -110094

प्रधान : श्री अंगद सिंह आर्य
महामन्त्री : श्री रामानन्द आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री राजकुमार आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती का १३८ वाँ बलिदान समारोह
परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित
ऋषि मेला
१२,१३,१४ नवम्बर २०२१
LIVE
स्थान : ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर
सम्पर्क - 0145-2621270, 8824147074

ओ३म्
वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प
इच्छुक महानुभाव अपना विस्तृत आवेदन पत्र निम्न अनुसार भेजें
प्रेरणास्रोत एवं मार्गदर्शक
देश-विदेश में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार हेतु प्रचारकों की आवश्यकता
वांछित योग्यताएँ
- युवा जिनकी आयु 18 से 30 वर्ष के मध्य हो
- गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ आधुनिक विषयों की भी शिक्षा प्राप्त की हो
- यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ-साथ सभी वैदिक संस्कार सम्पन्न कराने में निपुण हो
- आर्य समाज के प्रचार प्रसार की हार्दिक इच्छा रखता हो
- आर्य वीर दल का प्रशिक्षण प्राप्त हो

चयनित अभ्यर्थी को भाषा ज्ञान अनुभव व निपुणता के आधार पर उपयुक्त स्थानों पर नियुक्ति की जाएगी। सम्मानित मानदेय के अतिरिक्त वाहन व्यय, मोबाइल व्यय, स्वास्थ्य बीमा व आवास की सुविधा दी जाएगी।

डाक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
संयोजक, वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
संपर्क सूत्र : 9650183335
E-mail : aryasabha@yahoo.com

NEEL FOUNDATION
A SOCIAL INITIATIVE OF JBM GROUP

आओ मिलकर संगठन शक्ति बढ़ाएं, समाज को उन्नत बनाएं

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 8 नवम्बर, 2021 से रविवार 14 नवम्बर, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 11-12/11/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 10 नवम्बर, 2021

भारत के सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा - हम सब का दायित्व

इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

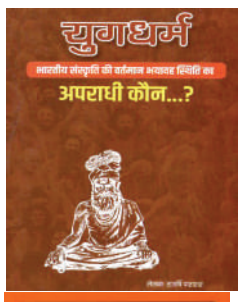

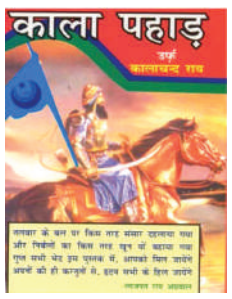

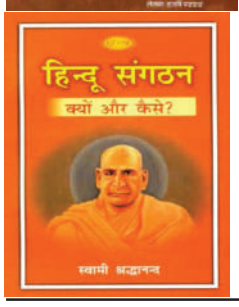

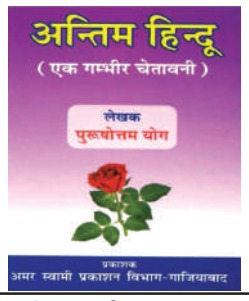

प्राप्ति स्थान :
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा मानवमात्र की सहायतार्थ तैयार किए गए मोबाइल एप्प

आज ही प्ले स्टोर से डाउनलोड करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

के अन्तर्गत

वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित

वैदिक साहित्य

अब

amazon

पर भी उपलब्ध

अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें

bit.ly/VedicPrakashan

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह